सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली — श्री साई शके : 29–30
अंक – 103 — फरवरी– 2011

ॐ

ॐ श्री साईनाथाय नमः
ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
Dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Parton
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Suscription
Inland
Yearly : Rs.100.00
Life time : Rs.500.00

Overseas
Yearly : US$ 50.00
Life time : US$ 200.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

वं. दादा जन्म–दिन : तिथी अनुसार – 02.02.2011
तारीख – 06.02.2011

आज वं. दादा जी का जन्म दिन। वं. दादाजी ने उनका सम्पूर्ण जीवन, हम सभी भक्तों को सुखी–समाधानी बनाने की सिद्धता प्राप्त करने के लिए व्यतीत किया। जो कि आज भी उनकी निराकार शक्ति मध्यस्थ के माध्यम से सम्पूर्ण रूप से कार्य केन्द्रों पर कार्य कर रही है। हमें जो सुख–समाधान प्राप्त हो रहा है उसमें वं. दादाजी को यकीनन आनन्द है; लेकिन क्या सिर्फ इसी कारण से उन्होंने परम् पूज्यनीय साईबाबा और दिव्य पूण्य विभूतियों के सहकार्य से इस विशाल कार्य की स्थापना की है ? आज के दिन यह विचार करना आवश्यक है।

आज हम इस कार्य का जो लाभ ले रहे हैं, वह अपना दुःख निवारण करने के लिए या ज्यादा से ज्यादा सुख–समाधान की प्राप्ती कर लेने के लिए; और वह भी अपने समय या अपने हिसाब से (As per our comfort)।

आज कुछ समय तक इस कार्य का लाभ लेने के बाद हम सभी को ऐसा विश्वास यकीनन प्राप्त हुआ होगा कि इस कार्य में आने से पहले जो अन्य देवी देवताओं की उपासना, पूजा–अर्चा या व्रत–वैकल्य करके भी जिस सुख–शांति–समाधान की प्राप्ती हमें नहीं हो रही थी, उस सुख–शांति–समाधान का लाभ आज हमें हो रहा है। अगर यह सच है, तो अब हमारे जीवन की भूमिका निश्चित करने का समय आ गया है और उसके लिए आज जैसा शुभ दिन अन्य कोई नहीं है। क्योंकि हमारे सद्गुरू ने खुद बहुत तकलीफें सहकर यह जो समिती का कार्य स्थापित किया है, उस कार्य के उद्देश्य को पूरा होने की शुरूआज इस से होगी। कोई भी निश्चय कल से नहीं किया जाता, अगर निश्चय करना है तो वह आज ही करना है, हमारे जीवन की भूमिका क्या है ? हमें अधिभौतिक जीवन चाहिए, ऐहिक जीवन चाहिए या परमार्थिक जीवन चाहिए ?

यह तय करने से पहले यह विचार करना आवश्यक है कि आज हम कौन सा या किस प्रकार का जीवन जी रहे हैं और अधिभौतिक, ऐहिक या परमार्थिक जीवन के मायने क्या हैं ?

आज हमें अधिदैविक और आध्यात्मिक जीवन के बारे में सोचना आवश्यक नहीं है, क्योंकि गुरूमार्गी होने के बाद हमें अब उस प्रकार का जीवन जीने की कोई वजह नहीं रहती।

अधिदैविक जीवन मतलब अपना पूरा आयुष्य देव–धर्म, पूजा–अर्चा, कुलधर्म–कुलाचार, होम–हवन तीर्थ क्षेत्र में उपासना करने में व्यतीत करना और आध्यात्मिक जीवन मतलब अपना पूरा आयुष्य ध्यान–धारणा, पोथी–पुराण, गुरू चरीत्र – अन्य ग्रंथ पठन, सिद्धता प्राप्ती में व्यतीत करना। अपने श्री गुरू ने प्रखर उपासना करके शक्ति की धारणा और सिद्धता की शक्तिपीठ, सभी कार्यकेन्द्र, प्रतिमाएँ और ऊँकार साधना, आरती साधना, मुलाखात साधना एवं कामकाज के निराकरण इनमें सिद्ध करके दी है। इसीलिए अब अधिदैविक या आध्यात्मिक जीवन का अनुसरण करने की कोई वजह नहीं है; सिर्फ गुरू मार्गदर्शन के अनुसार नित्य ऊँकार साधना करके शक्ति की धारणा करना महत्वपूर्ण है।

जो जीवन हम आज आसपास देखते हैं या संमिश्र रूप से जी रहे हैं वही अधिभौतिक और ऐहिक जीवन है। यही हमारे जीवन की भूमिका है या फिर हमें परमार्थिक जीवन चाहिए, यह निश्चय आज के दिन हमें करना है।

अधिभौतिक जीवन का मतलब है किसी यंत्र के अनुसार जीवन जीना। यंत्र शुरू किया तो वह कोई एक काम करता रहता है, उसी प्रकार की हमारी दिनचर्या होती है – सुबह उठना, शिक्षा के लिए या नौकरी–धंधा करने के लिए जाना, शाम को वापस आना, खाना खा कर सो जाना। इसमें, हमें जीवन में क्या प्राप्त करना है या हम कोई काम क्यों कर रहे हैं, इसका विचार नहीं किया जाता और प्रमुख रूप से, जैसे यंत्र शुरू होना और उसे बंद करना यह, उसका वरण जिसके हाथ में है वह तय करता है, उसी प्रकार हमारे जीवन का ज्यादातर कार्य अन्य लोग जो करते हैं वैसे होता है। मतलब किसी दोस्त को आज पार्टी करना है, उसने पूछा कि हम तैयार हैं। उसे अगर नॉन व्हेज खाना है, तो हम खायेंगे, उसने अगर किसी तीसरे व्यक्ति के बारे में कुछ बुरा कहा तो हमें उस तीसरे व्यक्ति का कोई अनुभव नहीं है लेकिन हमें कोई कह रहा है तो हम भी उस तीसरे आदमी की बुराई करना शुरू कर देते हैं, इत्यादी, इत्यादी। मतलब इस जीवन में हमारी क्रिया और प्रतिक्रिया कोई दूसरा व्यक्ति क्या सोचता है, क्या बोलता है उस पर निर्भर होता है। इस प्रकार के जीवन में जो जीना है उसे कोई लाभ नहीं होता न उसकी वजह से किसी अन्य को कोई लाभ होता है।

दूसरे प्रकार का जीवन मतलब ऐहिक जीवन। इसमें ऐहिक दृष्टि से खुद का और सिर्फ खुद का ही विचार किया जाता है। हमारे अलावा अन्य सभी का दर्जा दो नम्बर (Secondary) है ऐसे लगता है। हमारे पास जो चीज़ें है उनमें नहीं तो बाजार में आने वाली नई चीज़ों में ही सही मायने में सुख और समाधान है, ऐसी भावना होती है। सुखों के साधन के पीछे भागने में ही जिन्दगी व्यर्थ खर्च होती है और जीवन के अंत में, करोड़ों रूपया कमाया लेकिन जीवन के बाद तो सभी यहीं छोड़ देना है, तो फिर साथ में ले जाने के लिए क्या है ? यह सवाल रहता है। ऐसे जीवन में भी औरों का तो बिल्कुल भी नहीं लेकिन खुद का लाभ भी कुछ नहीं होता।

आज हम, अधिभौतिक और ऐहिक जीवन इन्हीं दो प्रकार का मिलाकर जीवन जी रहे हैं। लेकिन क्या इस प्रकार का जीवन हमें अपेक्षित है ? हमें तो आज परमार्थिक जीवन जीने का निश्चय करना है, लेकिन परमार्थिक जीवन के मायने क्या हैं ?

परमार्थिक जीवन का मतलब, प्राप्त हुए इस जीवन का **परम–अर्थ** क्या है ? इस जीवन का कारण क्या है ? इसका बोध लेकर उस कारण का पूर्णत्व करने के लिए जीवन व्यतीत करना। इस परमार्थिक जीवन की शुरूआत मतलब, जब हमें दुःख प्राप्त होता है, तब हम अन्य लोगों को, जिन्हें वह दुःख नहीं है, उनकी तरफ देखकर हम और भी परेशान होते रहते हैं और भगवान को या श्री गुरू को ऐसे पूछते रहते है कि यह दुःख मेरे ही जीवन में क्यों है? उसी प्रकार जो सुख–समाधान हमें प्राप्त हुआ है या प्राप्त हो रहा है, उसके लिए भी, जगत के अन्य लोगों को देखकर ऐसा विचार करना कि अन्य असंख्य लोगों को यह सुख–समाधान नहीं मिल रहा है लेकिन वह मुझे प्राप्त हुआ है, तो उसकी वजह क्या है ? अगर वजह समझ में आ गई तो ही वह सुख की प्राप्ती आगे भी कर सकेंगे या उसे वृद्धिगत कर सकेंगे। इस कार्य का लाभ लेने से पहले, देवी–देवताओं की आराधना करने पर भी हमें सुख–समाधान की प्राप्ती नहीं हुई थी; फिर जिन देवी–देवताओं की शक्ति इस विश्व को सम्भाल रही है, क्या वह मेरे जैसे मानव को दुःख निवारण करने के लिए असमर्थ हो सकती है ? देवी–देवता तो समर्थ हैं, लेकिन हमारा माध्यम उनका आर्शीवाद लेने के लिए असमर्थ था। फिर इस गुरूमार्ग का लाभ लेने के बाद, गुरू कृपा से, हमारे अंजाने में / ना समझते हुए, हमें सुख–समाधान का लाभ हुआ; मतलब हमारे माध्यम का विकास हमारे अंजाने में श्री गुरू ने करके दिया है। इसके आगे का विकास अब हम किस प्रकार कर सकते हैं इसका विचार आज करना है।

उसी प्रकार, कहाँ और किस प्रकार का जन्म लेने पर जीवन का अपूर्णत्व, पूर्णत्व प्राप्त करके अपने जन्म को सार्थक करना होगा। यह आत्मा ईश्वरी शक्ति की (गुरूमार्ग) सहायता से (मदद से) तय करना है; लेकिन जन्म लेने के बाद प्राप्त

हुए पाँच ऋणानुबंध, जीवन कार्यान्वित करने के लिए कारणीभूत होते हैं। इन ऋणानुबंध की अनुकूलता से जीवन में सुख प्राप्त होता है और उनकी प्रतिकूलता से दुःख का अनुभव आता है। आज हमें प्राप्त हुआ जीवन अच्छे घर में, अच्छे माँ–बाप से होकर हमें अच्छी शिक्षा मिली और सबसे प्रमुख रूप से इस श्रेष्ठ गुरूमार्ग का लाभ आज हमें प्राप्त हुआ है; मतलब हमारा कर्म तो अनुकूल है ही लेकिन जहाँ अपने जन्मकर्म ऋणानुबंध में (मतलब पिछले जन्मों के कर्मों से प्राप्त हुआ ऋणानुबंध) कमतरता हुई, वहाँ मातृ–पितृ और देवादिक ऋणानुबंध के पूण्य से (मतलब आज के और पहले के अनेक जन्मों के माता–पिता ने किए हुए सद्कर्म, देवी–देवताओं की उपासना और गुरूकृपा ने) वह जन्म कर्म की कमतरता पूरी कर दी थी और हमारी भेंट श्री गुरू से हुई। आज हमें ऐसा लगता है कि हमारे बच्चों को और आगे की पीढ़ीयों में हमसे ज्यादा सुख–शांति–समाधान–सम्पत्ति–दीर्घायुष्य का लाभ हो; लेकिन जो ऋणानुबंध हमें सुख–शांति–समाधान देने के लिए हमारे माता–पिता ने और पूर्वजों ने हमारे लिए जोड़ कर रखें, उस प्रकार हम अपने बच्चों के लिए क्या इन्तजाम कर रहे है? उनके जन्मकर्म ऋणानुबंध में) अगर कमतरता कभी हुई तो वह किस प्रकार से पूरी होगी? इसका इन्तजाम अगर आज हमने नहीं किया तो हमारे कुटुम्ब का आगे कितना भला होगा इसका आज विचार करना चाहिए।

इस प्रकार के मतलब खुद के और अपने कुटुम्ब के उद्धारक के विचारों की शुरूआत होना मतलब परमार्थिक जीवन की शुरूआत होना।

प्राप्त हुआ प्रत्येक जीवन यह उत्क्रांत होने के लिए ही होता है। वं. दादाजी ने, जीवन के उत्क्रांत का ज्ञान ही नहीं तो उसकी सिद्धता और उसके लिए आवश्यक शक्ति का आह्वान करके, उसकी प्रतिष्ठापना करके रखी है। हमें तो बस उसका लाभ लेना है। उस में से हमारे जीवन की और हमारे परीवार की ही (कुटुम्ब की) नहीं तो हमारे माध्यम से श्री गुरू को जगत का उद्धार करना है; लेकिन उसके लिए प्रथमतः परमार्थिक जीवन जीने का निश्चय करना आज आवश्यक है। इस जीवन की शुरूआत मतलब नित्य ऊँकार साधना, परमार्थ प्रश्नावली अनुसार आचरण और कार्य केन्द्र पर होने वाली आरती साधना और मुलाखात साधना के लिए हफ्ते में कम से कम एक दिन की उपस्थिति, इससे होगी। इसी से श्री गुरू को आगे जो अपेक्षित कार्य हमारे माध्यम से करना है, वह साकार होगा। इस प्रकार का यह परमार्थिक जीवन श्री गुरू के कृपार्शिवाद से हम सभी को प्राप्त हो, ऐसी वंदनीय दादा और परम पूज्यनीय साईनाथ महाराज इनके चरणों में विनम्र प्रार्थना।

।। शुभं भवतु।।

एहसास

पिछली मुलाखातों को दिल में उतारते उतारते एक दो बातें सामने आई, जो आपके साथ बाँटना चाहती हूँ।

हम सब केन्द्र पर कितने सालों से आ रहे हैं, यहाँ आना, बैठना अच्छा लगता है। हर तरीके से सकून महसूस होता है..... चाहे वे निराकरण से मिले, चाहे आरती सुनकर, साधना कर के, चाहे मुलाखात सुन कर, चाहे चुप से बैठकर बाबा–दादा की फोटो देख कर मिले। किन्तु, क्या हम ऐसा पूछते हैं कि सकून क्यूँ मिलता है? ऐसा क्या है यहाँ जो अन्य स्थानों पर नहीं है?

मेरे मन की समझ में यह आया कि इसके दो पहलू हैं :

1. किसी बात को अपने खुद के नज़रिये से देखना या अपने धर्म के मुताबिक और

2. जो असलियत है उसे पहचाने या गुरू की मान कर, गुरू शक्ति धारण करके स्वीकार करना, कभी–कभी यह जरूरी होता है कि क्योंकि परमार्थ समझना कोई आसान बात नहीं है।

हम केन्द्र पर अपनी–अपनी सोच से आते हैं और हमारा विचार उसी के साथ एक रूप हो जाता है। जिसे हम दुःख समझते है वही हमारे मन को तकलीफ देता है। बाबा–दादा की फोटो, पंतजी और दोनों विभूती महाराज की फोटो देखते देखते, हमारा “दुःख”, हमारी माँगें ही एहमीयत रखती है।

किन्तु, यहाँ केन्द्र पर क्या है, क्या यह सब फोटो केवल फोटो ही है? नहीं! बाबूजी ने बहुत बार बताया है कि यहाँ शक्ति जाग्रत है। शक्ति की ही पूजा होती है। केन्द्र पर गुरू का वलय फैला हुआ है जो साधना, अभिषेक, आरती, मुलाखात से कायम रहता है।

प्रतिमाएँ शक्ति की प्रतीक है, पादूका में ऊँकार की, गुरू की शक्ति धारण है (सूर्य बिम्ब + चन्द्र बिम्ब) लय तत्व भी चन्द्रमा के प्रतीक से जुड़ा है।)

यहाँ हम कैसे बोल रहे हैं, क्या सोच रहे हैं बहुत मायने रखता है क्योंकि गलत सोच विचार से हम वलय को दूषित कर देते हैं। कई बार पूजा शुरू होते ही फूल गिर जाते हैं, कई बार जब मुलाखात हो रही होती है तो किसी खास पाईन्ट पर भी फोटो से फूल गिरते हैं। यह हम सब ने देखा है यह कोई इत्तफाक नहीं है।

बाबूजी ने बताया कि केन्द्र पर जो श्री पादुका है वह ब्रम्हाण्ड की शक्ति का प्रतीक है। जब अभिषेक किया जाता है, शक्ति प्रकटित होती है, ऊँकार की पूजा होती है – यह पूजा प्रतिदिन होती है। इसे मामूली बात नहीं समझना चाहिए – यहाँ ऐसी पूजा करने का मौका मिल रहा है यह बहुत बड़ी बात है – जो दुआ हम पाते हैं, उसका हमें अंदाजा ही नहीं हो सकता क्योंकि हमारा विचार इस बात पर नहीं होता।

देवी देवताओं की शक्ति हमारे घरों में भी है – प्रतिमाओं के रूप में। इनकी शक्ति से हमें रोज़ दुआ मिलती है। हमारी रक्षा होती है। हमें प्रतिमाओं को माथे से लगाना चाहिए। उनका बहुत आदर करना चाहिए, सम्मान करना चाहिए यह हमारा कर्त्तव्य है क्योंकि हमारे प्यारे गुरू ने अपना पूरा जीवन भक्तों को सुख व खुशियों को देने में ही बिताया था। उनकी शक्ति (गुरूवलय) आज तक दुनियाँ की भलाई के लिए ही कार्य कर रही है और करती रहेगी। उनका सिखाया हुआ गुरूमार्ग मानव कल्याण के लिए पूरी तरह से सक्षम है और यदि हम भक्त अपना विचार बन कर इस मार्ग पर चलने के लिए निश्चिंत हो जाए तो हमारा जीवन सफल कहलाएगा।

आज उदी लेना, काम–काज में निराकरण से निवारण प्राप्त करना, साधना, आरती, मुलाकात का आनन्द लेना, धागा बंधवाना कितना आसान है। लेकिन यह सारे साधन सिद्ध करने में श्री दादी जी ने कितनी तकलीफें उठाई और कैसे उन्होंने छोटी उम्र से ही गुरू की आज्ञा का पालन किया, यदि हम "आत्मनिवेदन" और "गुरू प्रसाद" पढ़ें और जीवन में अपना लें, तभी जीवन का कुछ अर्थ होगा।

बाबूजी ने बताया कि परमार्थ के बिना जीवन में कोई मायने नहीं है और दूसरी तरफ परमार्थ अपनाना बहुत कठिन होता है। बाबा, दादा ने बताया है कि जीवन में पचास प्रतिशत प्रपंच और पचास प्रतिशत परमार्थ होना चाहिए – केवल प्रपंच हो, तो परमार्थ नहीं मिलता। परन्तु परमार्थ अपनाएँ तो वह प्रपंच भी सम्भाला जा सकता है। हमारा इरादा पक्का हो तो यह कैसे करना है वह रास्ता श्री गुरू बताएगें। यह विश्वास दिल में रखना चाहिए।

–कुमकुम सिंह

Death and life are manifestations of God's activity. You cannot separate the two. God permeates all. However, None is born. None dies. See with your inner eye. Then you realise that you are God, and not different from him.

Like a worn-out garment, the body is cast away by God.

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेशित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26955261

E-mail : saikalp@gmail.com Dadab6@gmail.com